

मोड्यूल 14 : जन्मतेही साँस लेने में कठिनाई : निदान तथा बैग और मास्क से उपचार

सत्र 2 : जन्मतेही दम घुटने के निदान तथा उपचार का पहला कदम, की दोहराई

दिवस : 1

समयावधि : 55 मि.

प्रयोजन

आशाओं को नवजात शिशुओं में जन्मतेही दम घुटने की पहचान कराना, इसके परिणामों के बारे में जानकारी देना और प्रसव के दौरान उन परिस्थितियों की जानकारी देना, जिनके कारण जन्मतेही शिशु की साँस में घुटन हो सकती है।

उद्देश्य

सत्र के अंत में आशाओं में निम्न योग्यताएँ आएँगी –

1. जन्मतेही दम घुटने की परिभाषा बताना।
2. ऐसे शिशुओं को पहचानना, जिनकी जन्मतेही साँस लेने में घुटन हो रही है (अभ्यास कराना)
3. प्रसव के दौरान की उन परिस्थितियों की जानकारी देना, जिनके कारण जन्मतेही शिशुओं को साँस लेने में कठिनाई हो सकती है।
4. दम घुटने के विपरीत परिणामों की सूची बनाना।

सामग्री

- अध्ययनपत्र 1: जन्मतेही दम घुटना संबंधी जानकारी (मोड्यूल 12 अध्ययनपत्र में है)

तैयारी

- प्रशिक्षणार्थियों से कहें कि वे अपने अपने अध्ययनपत्र साथ में रखें।

प्रशिक्षण विधि

प्रस्तुति एवं चर्चा: साँस में घुटन किसे कहते हैं और इसके परिणाम ? (30 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. निम्न कहानी सुनाएँ :
शालु को शाम के समय प्रसवपीड़ा शुरू हुई। उसके पति दाई और आशा को तुरंत ही बुला लाए। शालु को रुक-रुक कर और ज़ोर से दर्द हो रहे थे। सुबह-सुबह उसकी पानी की थैली फट गई और गाढ़ा, हरे रंग का पानी बाहर निकलने लगा। इसके तुरंत बाद बच्चे का सिर बाहर आने लगा, तो दाई ने देखा कि उसकी गर्दन के चारों ओर नाल लिपटी हुई है। उसने बच्चे के सिर के ऊपर निकालने की कोशिश की पर नहीं कर पाई। उसने शीघ्रता से नाल बाँधी और काट दी जबकि बच्चे का शरीर अंदर ही था। इसके बाद बच्चा तो आसानी से बाहर आ गया, पर वह बहुत धीमे रोया और हाँफ रहा था।
2. निम्न प्रश्न पूछें :
 - क्या बच्चे की साँस घुट रही थी ? (हाँ)
 - इसके क्या लक्षण हैं ? (धीमे से रोना और हाँफना)

3. किसी एक आशा से पूछें, कि क्या वे किसी ऐसे प्रसव के समय उपस्थित थीं, जिसमें शिशु रोया नहीं अथवा साँस नहीं ली, धीमे से रोया और हल्की साँस ली ? यदि हाँ, तो उनसे पूछें कि उन्होंने क्या देखा / क्या प्रसवपीड़ा ठीक-ठाक हुई या फिर कोई समस्या हुई ? क्या समस्या हुई ? उनके उत्तर बोर्ड पर लिखें।
4. सभी को बताएँ कि साँस लेने में घुटन किसी भी शिशु को हो सकती है, किसी महिला को प्रसव ठीक-ठाक हुआ हो तो भी। इसलिए प्रत्येक प्रसव से पूर्व इस बात के लिए तैयार रहना चाहिए। अतः हर प्रसव के समय निम्न तैयारी रखें।
 - साफ कपड़े, तौलिये तथा शिशु के लिए कंबल।
 - चूषण पंप
 - बैग/ मास्क (देखें की वह साफ सुथरा है और काम कर रहा है। बैग और मास्क का प्रयोग आप अगले सत्र में सीखेंगे)
5. आशाओंको याद दिलाएँ : यदि शिशु की साँस में घुटन है, तो प्रसव के पहले 5 मिनट आपात्कालीन स्थिति हैं। इन्हीं 5 मि. के समय में जीवन बचाया जा सकता है, या फिर वह समाप्त भी हो सकता है।
6. आशाओं से कहें कि वे अध्ययनपत्र में 'जन्मतेही दम घुटना', संबंधी जानकारी देखें। आशाओं को जानकारी पढ़वाएँ और उनके प्रश्नों के उत्तर दें।

पूरे समूह के हल करने के लिए छोटे केस उदाहरण (10 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. प्रत्येक केस प्रस्तुत करें। प्रशिक्षणार्थियों से पूछें, कि इनमें से प्रत्येक शिशु की साँस में घुटन हो रही है या नहीं :
 - शिशु का जन्म 12 बजकर 3 मि. पर हुआ। 30 से. में वह रोने लगा और ठीक से साँस लेने लगा। क्या उसकी साँस में घुटन थी ? (नहीं)
 - नीला ने लड़की को जन्म दिया। 30 से. बाद बच्चा रोया नहीं, पर हाँफ रहा था। क्या उसकी साँस में घुटन थी ? (हाँ)
 - सुनन्दा का शिशु जन्म के तुरंत बाद धीमे से रोया और हल्की साँस ली। क्या उसे साँस में घुटन थी? (हाँ)
 - नन्दा, का बच्चा ढीला-ढाला जन्मा और न रोया, न साँस ली। क्या उसकी साँस में घुटन थी ? (हाँ)
 - मीरा का बच्चा जन्मतेही धीमे से रोया और हाँफ रहा था। क्या उसकी साँस घुटी हुई थी ? (हाँ)
 - मंजू का बच्चा जन्म के समय ज़ोर-ज़ोर से रोया और ज़ोर से साँस ली। क्या उसकी साँस में घुटन थी ? (नहीं)
2. प्रत्येक केस प्रस्तुत करें। प्रशिक्षणार्थियों से कहें कि प्रत्येक शिशु में जन्मतेही साँस में घुटन के खतरे है या नहीं कहें और चेतावनी देने वाले लक्षण बताएँ
 - मंगला की प्रसव पीड़ा शुरू हुयी। झिल्लि फटी और बहुत कम पानी गया (हाँ, शुष्क प्रसव)।
 - मीना की प्रसवपीड़ा एक पूरा दिन और एक आधा दिन चली (हाँ, लंबी प्रसवपीड़ा)।
 - अर्चना के प्रसव के दौरान शिशु का एक हाथ पहले बाहर आया (हाँ, सिर के अलावा अन्य भाग का पहले बाहर आना)

- यमुना को गर्भावस्था के सातवें महीने में बच्चा पैदा हुआ (हाँ, समयपूर्व जन्म)।
 - सिन्धु की प्रसवपीड़ा लगभग 30 घंटे चली (हाँ, लंबी प्रसवपीड़ा)।
3. ध्यान रखें कि प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी को बात समझ में आ रही है। सभी की तृंकाओं का समाधान करें।
 4. आशाओंको जन्मतेही दम घुटने का कृती चार्ट देखने को कहें। बताएँ कि यदि झिल्लि फटते ही निकलने वाला द्रव गाढ़ा तथा पीले या हरे रंग का हो तो शिशु का सिर बाहर निकलतेही शिशु का मुँह पट्टी वाले कपड़े से अंदर से साफ करें। यह आशाओं ने प्रशिक्षण कार्यशाला 2 में सीखा हैं। उन्होंने प्रसव के समय यह कार्य किया भी होगा। बताएँ कि यदि जन्मतेही शिशु रो नहीं रहा, साँस नहीं ले रहा, हल्की साँस ले रहा है या हाँफ रहा है तो इसका अर्थ है कि उसका दम घुट रहा है और उसे उपचार की आवश्यकता है। उपचार को पुनरुज्जीवन (कृत्रिम साँस दिलाना) कहते हैं।
 5. पुनरुज्जीवन की प्रक्रिया बताएँ:
 - **पोंछना तथा लपेटना** : बताएँ कि जन्मते ही शिशु को शीघ्रता से कपड़े से पोंछ लेना तथा सूखे कपड़े में लपेटना चाहिए। कभी-कभी ऐसा करने से वह रोने और साँस लेने लगता है।
 - **चूषण पम्प का प्रयोग** : यदि शिशु पोंछने और लपेटने से भी रोए नहीं, तो उसकी साँस की घुटन दूर करने के लिए दूसरा कदम है, उसके मुँह, गले और नाक के स्रावों को साफ करना, जिससे कि वह अच्छी तरह साँस ले सके। इसके लिए चूषण पम्प का प्रयोग किया जाता है। शिशु का मुँह साफ किया जाता है और यदि वह तब भी रोता तथा साँस नहीं लेता, तो उसका गला और नाक साफ किए जाते हैं।
 - **इस उपकरण के प्रयोग के पहले नाल नही काटनी चाहिए** (पर यदि नाल छोटी है और पर्याप्त जगह नहीं है तो नाल पहले काटी जा सकती है)। यदि शिशुजन्म चारपाई पर कराया जा रहा हो, तो शिशु को नीचे ज़मीन पर लिटाना ठीक रहता है, जिससे कि उसकी नाल से खून बच्चे के शरीर में आता रहे। यदि जन्म चारपाई पर न कराया जा रहा हो, तो शिशु को ज़मीन पर माँ के दाईं ओर माँ की तरफ सिर करके लिटाया जाना चाहिए।
 - **बैग और मास्क** : यदि स्राव निकालने वाले उपकरण की मदद से भी शिशु रोता नहीं और साँस नहीं लेता, तो तुरंत बैग और मास्क का प्रयोग करें। दम घुटने के उपचार में यह दूसरा कदम है और इसके बारे में अगले सत्र में बताया जाएगा।
 6. आशाओंको याद दिलाएँ :
 - यदि शिशु ठीक से रो रहा है और साँस ले रहा है तो स्राव निकालने वाले उपकरण का प्रयोग न करें।
 - शिशु को ढँकना और गर्म रखना आवश्यक है।
 - जैसे ही शिशु रोना/साँस लेना शुरू कर दे, स्राव निकालने वाले उपकरण का प्रयोग बंद कर दें।

प्रदर्शन (10 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. आशाओं से कहें कि वे स्राव निकालने वाले उपकरण वाली जाँच-सूची अपने अध्ययनपत्र में देखें।
2. सबसे पहले एक कप/कटोरी से पानी खींचकर दिखाएँ कि यह उपकरण कैसे कार्य करता है।
3. इसके बाद इस उपकरण का प्रयोग बच्चे के आकार की गुड़िया (खिलौने) में करके दिखाएँ। जैसा-जैसा करें वैसा वैसा बोलती भी जाएँ।

यदि चूषण के बाद भी शिशु साँस नहीं ले रहा हो तो तुरंत **अगली कार्यवाही करें** : शिशु को कृत्रिम साँस दिलाने के लिए (फेफड़ों में हवा भेजने के लिए) बैग और मास्क का प्रयोग करें। यदि ऐसा समय से न किया गया, तो शिशु के मस्तिष्क में विकृति हो सकती है, या वह मर भी सकता है। (बैग और मास्क का प्रयोग अगले सत्र में बताया जाएगा) स्राव बाहर निकालने वाले उपकरण का प्रयोग केवल एक ही बार करके उसे फेंक देना चाहिए।

सारांश : (5 मि.)

- किसी एक आशासे पूछें, कि यदि शिशु का दम घुट रहा हो, तो क्या करना चाहिए।
- दूसरी आशासे स्राव निकालने वाले उपकरण के प्रयोग का प्रदर्शन करने को कहें, जबकि अन्य सभी जाँच-सूची का प्रयोग करते हुए निरीक्षण करती रहें।
- कुछ गलतियाँ हों, तो सुधारें और महत्वपूर्ण जानकारी दोहराएँ।
- आशाओंकी उनके अच्छे काम के लिए प्रशंसा करें।

सत्र का मूल्यांकन

उद्देश्य	आंकलन विधि	परिणाम
जन्मतेही दम घुटने की परिभाषा बताना।	कक्षा में प्रश्नोत्तर	—
साँस में घुटन वाले शिशुओं को (अभ्यास द्वारा) पहचानना	केस उदाहरण के माध्यम से अभ्यास	—
प्रसवपीड़ा के दौरान उन परिस्थितियों के बारे में बताना, जो शिशुओं में साँस में घुटन की चेतावनी देती हों	केस उदाहरण	—
साँस में घुटन के विपरीत परिणामों की सूची बनाना	प्रश्नोत्तर	—